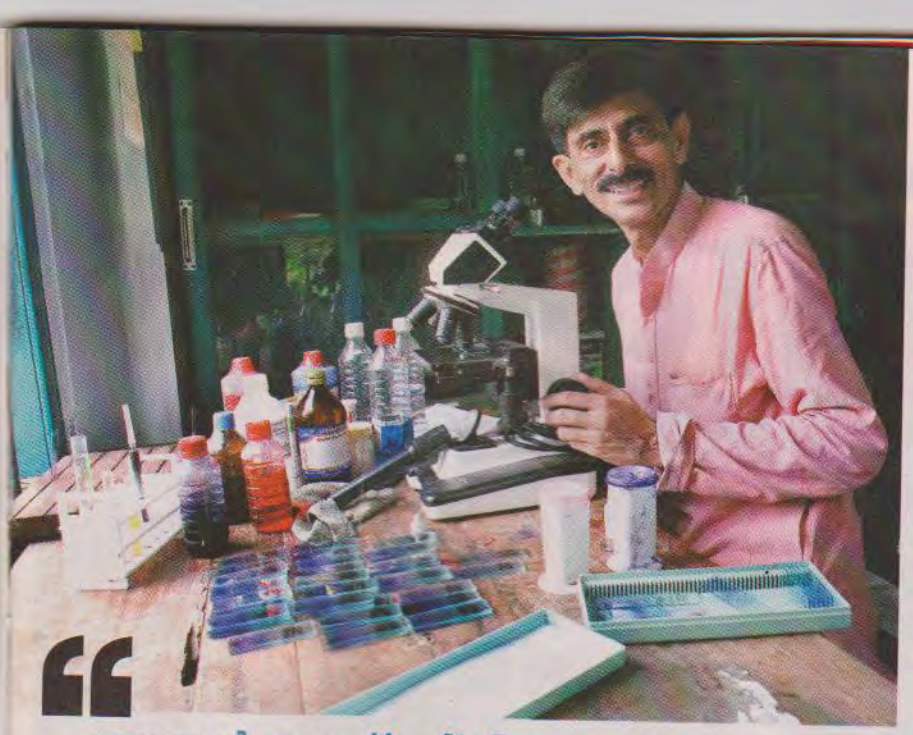

"मुझ पर झोलाछाप डॉक्टरों की मदद का आरोप लगाया जाता है लेकिन यहां एमबीबीएस टिकते ही नहीं."
सुनील कौल, डॉक्टर

की जांच करने का प्रशिक्षण दिया और मलेरिया परजीवी की पहचान करवाई. स्थानीय केमिस्टों को भी उन्होंने दवाओं की सही खुराक देना सिखाया. एक स्थानीय लड़का कार्लोस सर्वाधिक विश्वसनीय तकनीशियन है. कौल कहते हैं, ''मुझ पर झोलाछाप डॉक्टरों की मदद करने का आरोप लगाया जाता रहा है, लेकिन यहां कोई एमबीबीएस डॉक्टर रहने को ही तैयार नहीं है.''

एएनटी के हर केंद्र के तहत 80 छोटे गांव हैं और लगभग 6,000 ग्रामीणों तक सहज पहुंच है. एएनटी की शुरुआत के बाद ही कौल ने 11 लोगों को प्रशिक्षित किया, इनमें से आठ अब भी जुड़े हैं. ये लोग एएनटी से अलग प्रयोगशाला चलाते हैं, जिनका प्रबंधन स्थानीय समिति देखती है. वे कहते हैं, ''मैं चाहता था कि वे हर इकाई के प्रति जवाबदेह बनें, और परीक्षणों के लिए लोगों से वाजिब फीस वसूलें. मुझे उम्मीद थी कि इससे न सिर्फ स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध होगी बल्कि मुनाफा भी होगा. इनमें कुछ तो बहुत अच्छी तरह काम कर रहे हैं लेकिन राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन अब जब नए क्लीनिक स्थापित करने जा रहा है तो भविष्य में इन केंद्रों से बहुत कमाई न हो पाए.'' यानी सरकार को रास्ता दिखाने का श्रेय वे लेना नहीं चाहते. —एलोरा सेन

में मुकदमा भी चला—के हाथों प्रताड़ित महिलाओं की मदद करने का फैसला किया.

उसके बाद उनके जीवन का निर्णायक क्षण आया. 1991 में उन्होंने इस उद्देश्य को समर्पित एक स्वयंसेवी संस्था 'स्टेप्स' बनाई. शुरू में खानम को भी अपनी सफलता के बारे में शुबहा था. लेकिन उनके इरादे तब और दृढ़ हो गए जब उन्होंने देखा कि मुस्लिम महिलाओं को तीन बार तलाक, तलाक, तलाक कह कर तलाक दिया जा रहा था. फोन यहां तक कि ई-मेल के जरिए भी इस तरह तलाक दिया जाना वैध माना जाने लगा था. 1990 के दशक में दक्षिणपंथी गुटों द्वारा व्यापक सांप्रदायिक हिंसा—कई बार सरकार के उकसावे पर—ने उन्हें इस्लाम के प्रति अपने संबंधों को सोचने पर मजबूर कर दिया. एक धर्मपरायण मुस्लिम के रूप में पली-बढ़ी खानम ने खुद को उग्र नारीवादी कहलाने का फैसला किया. वे कहती हैं, ''अपनी बिरादरी से मुझे ऐसी प्रतिक्रिया की उम्मीद नहीं थी. मैं उन्हें उनके बुनियादी अधिकारों के प्रति संवेदनशील बनाना चाहती थी. लेकिन एक बार आजादी का स्वाद चखने के बाद महिलाओं ने मुझसे असली ताकत देने का अनुरोध किया.''

बुलंद आवाजः निर्माणाधीन मस्जिद के आगे खानम

"मुस्लिम महिलाओं को बात करने, दुख-दर्द कहने और इबादत की आजादी मिले. सामुदायिक फैसलों में उनकी राय ली जाए."
शरीफा खानम, संस्थापक, स्टेप्स

स्टेप्स अब तक 10,000 से अधिक महिलाओं की मदद कर चुकी है. वैवाहिक झगड़े, दहेज और यौन शोषण से जुड़े मामले सुलझाने में भी इसने मदद की है. संस्था ने बेसहारा महिलाओं को नए सिरे से बसाने और कई महिलाओं को रोजगार देने में भी मदद की है. इस बहादुर महिला का कहना है, ''स्टेप्स का मुख्य उद्देश्य महिलाओं में आत्मविश्वास विकसित कर उन्हें आत्मसम्मान और गौरव का जीवन जीने में मदद करना है.''

खानम एक संतुष्ट महिला हैं. मुस्लिम मुल्लाओं की धमकियों के बावजूद उन्होंने लंबा सफर तय किया है, और तमिलनाडु के 31 में से 15 जिलों में वे महिला जमात स्थापित कर चुकी हैं. इन जमातों के 25,000 से अधिक सदस्य हैं जो महीने में एक बार मिलती हैं और अपनी समस्याओं और मुद्दों पर चर्चा करती हैं. लेकिन चार साल के बाद भी खानम को मुस्लिम कट्टरपंथियों के विरोध का सामना करना पड़ रहा है. लेकिन ऐसे विरोध उन्हें अपने रास्ते से डगमगा नहीं सकते. वे कहती हैं, ''मैं उनसे कोई धार्मिक युद्ध लड़ने नहीं जा रही. मैं तो महिलाओं के मसलों के समाधान के लिए पुरुषों के पास जाती हूं. यदि वे नहीं मानते तब हम पुलिस के पास जाते हैं.''

पैसे की कमी की वजह से सिर्फ महिलाओं के लिए मस्जिद का निर्माण अस्थायी रूप से थम गया है. खानम पहले ही अपनी बचत और जमात की महिला सदस्य जो थोड़ा-बहुत अनुदान दे सकती थीं, उसमें से 10 लाख रु. खर्च कर चुकी हैं. इस परियोजना के लिए उन्हें 50 लाख रु. की जरूरत पड़ेगी, व्यवसायी रहमद से विवाहित खानम हार मानने वाली नहीं. उनकी मां उनके लिए सतत प्रेरणास्रोत रही हैं. मां की मृत्यु के बाद यह भूमिका उनकी बड़ी बहन हुमरा खानम ने ले ली है. उनका बस एक ही मिशन है और उनका मानना है कि यह संभव है. वे गर्व से कहती हैं, ''मैं तो बस यही चाहती हूं कि मेरी मस्जिद जीवंत, इस्लामी, नारीवादी और लोकतांत्रिक संस्कृति का केंद्र बने.'' इंशाअल्लाह! —लक्ष्मी सुब्रह्मण्यम